

प्रेस विज्ञप्ति

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग में कायोबायोप्सी का शुभारम्भ

आज दिनांक 14 मई 2019 को किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के रेस्पिरेटरी मेडिसिन के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सूर्यकान्त ने विभाग के समस्त डाक्टरों की उपस्थिति में कायोबायोप्सी कार्यशाला का विधिवत शुभारम्भ किया। उन्होंने कहा कि आज का दिन रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग के लिए एक नया अध्याय लेकर आया है वैसे तो इस विभाग में ब्रान्कोस्कोपी की शुरुआत 1986 में ही हो गयी थी। तत्पश्चात प्रगति के क्रम में वीडियो ब्रान्कोस्कोपी 2002 में एवं थोरैकोस्कोपी 2007 में इस विभाग में प्रारम्भ हुयी।

कायोप्रोब का प्रयोग रिजिड अथवा फ्लेक्सिबल ब्रान्कोस्कोप के माध्यम से किया जाता है। कायोबायोप्सी में इस्तेमाल होने वाले कायोप्रोब को अति ठण्डा (-50 से -75C) करने के लिए कार्बनडाईआक्साइड एवं नाइट्रोज़ाइड गैसों का प्रयोग किया जाता है। जैसे ही कायोप्रोब ऊतकों के सम्पर्क में आता है, ऊतक कायोप्रोब से चिपक जाते हैं। इसके बाद प्रोब को ब्रान्कोस्कोप सहित फेफड़े से बाहर निकाल लिया जाता है और निकाले गये बायोप्सी के टुकड़े को उचित माध्यम में जांच के लिए रख लिया जाता है।

कायोबायोप्सी के आ जाने से फेफड़े के कैंसर, टीबी तथा आइ.एल.डी. जैसी गम्भीर बीमारियों की सटीक जांच हो सकेगी इसके द्वारा बायोप्सी की जांच करने में कम रक्त स्त्राव व कम जटिलता होती है।

इस मशीन के द्वारा सिर्फ जांच ही नहीं बल्कि जटिल रोगों के उपचार में मदद मिलेगी। इस मशीन से सांस की नली में फॅसी फारेन बाड़ी को निकालने में मदद मिलेगी तथा सांस की नलियों की सिकुड़न (स्टेनोसिस) को भी सही करने में मदद मिलेगी। इस मशीन से फेफड़े के ट्यूमर की बायोप्सी भी असानी से हो जायेगी।

इस मौके पर कायोबायोप्सी के उपकरण तथा इसके प्रयोग के बारे में एक सफल कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। जिसमें सभी चिकित्सकों एवं जूनियर डाक्टर्स को इस मशीन के उपयोग के बारे में प्रशिक्षण दिया गया।

इस मौके पर रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग के चिकित्सक प्रो० एस. के. वर्मा, प्रो० राजीव गर्ग, डा० अजय कुमार वर्मा, डा० आनन्द श्रीवास्तव, डा० दर्शन कुमार बजाज व समस्त सीनियर एवं जूनियर रेजिडेन्ट्स तथा ब्रान्कोस्कोपी यूनिट के सभी टेक्निशियन व सहयोगी स्टाफ मौजूद रहें। इस कार्यक्रम का संचालन डा० ज्योति बाजपाई ने किया।